कालिदास - नागार्जुन

कवि परिचय:

प्रगतिवाद के बहुचर्चित एवं बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार कवि बाबा नागार्जुन । नागार्जुन का मूल नाम बैद्यनाथ मिश्र था। पिता गोकुल मिश्र और माता उमा देवी के बेटे नागार्जुन स्वभाव से पिता की तरह ही घुमक्कड स्वभाव के थे । वे अपने जीवन काल दरमियान थोडे समय श्रीलंका में रहे थे और वहाँ बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म स्वीकार किया था । उन्होंने अपना नाम 'नागार्जुन' रख दिया और हिन्दी साहित्य जगत में आज यही नाम चिरंजीव रहा है ।

नागार्जुन का काव्य-सृजन छायावाद से लेकर बीसवीं सदी के अंत तक माना जाता है। प्रगतिवाद की चर्चा नागार्जुन के बिना अधूरी लगती है । उन्होंने काव्य विधा की हर धारा में सृजनात्मक कार्य किया है । उनकी कविताओं में समकालीन परिवेश, विविध राजकीय एवं सामाजिक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती है ।

प्रमुख रचनाएँ : उनके लगभग १४ काव्य संकलन, २ खंड काव्य, १३ उपन्यास, कथा, स्फुट साहित्य उपलब्ध हैं ।

'कालिदास' काव्य की पृष्ठभूमि :

संस्कृत साहित्य में नागार्जुन के सबसे प्रिय कवि कालिदास हैं । कालिदास रचित - मेघदूत का अनुवाद किया है । उन्हें संस्कृत में लिखने की प्रेरणा कालिदास के काव्य में व्याप्त अनुभूति को देखकर मिली है । कालिदास रचित 'कुमारसंभवम्' से प्रेरणा पाकर नागार्जुन ने एक खंडकाव्य की रचना की, जिसका नाम 'भस्मांकुर' काव्यसंग्रह है । जिससे यह अंश लिया गया है ।

सारांश : प्रस्तुत कविता में नागार्जुन कालिदास से प्रश्न करते हैं कि - कालिदास सच - सच बतलाना..... संस्कृत साहित्य में कवि कालिदास ने अपने नायक-नायिका की परपीडा का वर्णन किया है और नागार्जुन ने कालिदास रचित 'रघुवंशम्', 'कुमारसंभवम्' और 'मेघदूतम्' से प्रसंग लेकर शायद इस काव्य की रचना की होगी । कालिदास से संबोधित करते है कि रघुवंश में (राजा अज-और रानी इंदुमति) की कथा है । राजा अज दशरथ के पिता थे और रघु के पुत्र थे और उन्होंने विदर्भ की राजकुमारी इंदुमति के स्वयंवर में जाकर विवाह किया था । अज इंदुमति से बहुत प्रेम करते थे । एक दिन नारद जी प्रसन्नचित्त होकर अपनी

वीणा (वाद्य) के साथ आकाश में भ्रमण कर रहे थे और संयोगवश एक फूल वीणा से टूटकर बगीचे में सैर करती रानी इंदुमति के सिर पर जा गिरा और जिससे इंदुमति की मृत्यु हो गई । राजा अज इंदुमति की मृत्यु से विह्वल हो गए और जलसमाधि ले ली । कालिदास ने यहाँ इंदुमति और अज के बिछडने का जो वर्णन किया है उसकी अनुभूति से प्रेरित होकर कवि नागर्जुन कालिदास से पूछते हैं कि "कालिदास सच-सच बतलाना....।"

कुमारसंभव में उस घटना का वर्णन है कि जब देवता तारकासुर से पराजित हो चुके थे और दानव देवताओं को अनेक प्रकार के छल करके परेशान कर रहे थे । सभी देवगण और इंद्र मिलकर ब्रह्मा से मिलने आए और तारकासुर के वध के लिए योग्य सेनापति की मांग की । ब्रह्मा जी बताते है कि शिव और पार्वती का पुत्र ही तारकासुर का वध करने के लिए सक्षम है । शिव अभी तपस्या में मग्न है । शिव की विरक्त भावना को दूर किया जाए और शिव पार्वती पर मोहित हो जाए । शिव की विरक्त भावना को दूर करने का काम इंद्र ने कामदेव को सोंपा और कहा कि वह अपने साथी बसंत और पत्नी रति के साथ वहाँ जाए । पार्वती जब शिव को माला अर्पण करने गई तभी कामदेव ने मोहपाश का बाण चलाकर शिव को पार्वती पर मोहित कर दिया । जब भगवान शिव ने इसका कारण जानने के लिए अपने नेत्र बंध किए तो उन्हें कामदेव दिखाई पडे और क्रोधित होकर अपने तृतीय नेत्र से अग्नि ज्वाला प्रकट हुई और जिस प्रकार सूखी समिधा (लकडी) हवन में जलकर भस्म हो जाती है उसी प्रकार कामदेव लोक कल्याण हेतु शिव ने भस्म कर दिया । अपने पति कामदेव को भस्म होते देख रति ने क्रंदन शुरू कर दिया - शायद इस प्रसंग का वर्णन करते समय स्वयं उस पीडा-विरह को भोगा होगा । कवि नागर्जुन कालिदास से पूछते हैं कि कालिदास सच-सच बतलाना रति रोई या तुम रोये थे ?

काव्य 'मेघदूत' - दूत काव्य है और यहाँ यक्ष और यक्षिणी के विरह की कथा है । कुबेर प्रातः सौ कमल भगवान को चडाते थे और सौ कमल इकट्ठे करना यक्ष की ज़िम्मेदारी थी । एक दिन यक्ष जब कमल लेकर बगीचे से लौट रहा था तब रास्ते में उसे यक्षिणी मिल जाती है और एक कमल उसके बालों में लगा देता है । कुबेर को जब पूजा करते समय ज्ञात होता है कि एक कमल कम है तो, क्रोधित होकर यक्ष को निष्कासित कर देते है । उसे शाप देते है कि एक वर्ष तक वह अपनी पत्नी का विरह सहन करना होगा । यक्ष अलका नगरी से दक्षिण दिशा में रामगिरि में निवास करता है । यक्ष जैसे-तैसे आठ माह तो व्यतित कर लेता है पर आषाढ़ मास के पहले दिन वह पत्नी की याद में व्याकुल हो उठता है और उसे संदेश भेजने का निर्णय लेता है । काले मेघ (बादलों) द्वारा संदेश भेजना चाहता है । नागार्जुन

कालिदास से पूछते हैं कि जल से भरे उन मेघ के साथ साथी बनकर उडने वाले क्या तुम ही थे? पर पीडा की बात करते हुए नागार्जुन पूछते है कि दूसरों की पीडा यानि यक्ष की पीडा का भार सहन करते-करते जब तुम थक कर चूर-चूर हो गए थे तब निर्मल पर्वत पर कब तक सोए रहे थे । सच सच बतलाना यक्षिणी के विरह में यक्ष रोया था कि तुम रोए ?

विशेषता :

कवि जब काव्य की रचना करता है तो स्वयं उस काव्य में इतना एकाकार हो जाता है कि उन पात्रों के वर्णन में अपने आप को समा देते है । बाबा नागार्जुन के अनुसार संस्कृत साहित्य में कालिदास ने अपना कालाजयी स्थान बनाया है वह अन्य कोई नहीं ले सकता । इस काव्य में कवि परंपरा, पौराणिक कथा एवं समकालीन जीवन की कथा है । इसकी कथा पौराणिक होते हुए भी आधुनिक युग से जुड गई है । कामदेव का त्याग, स्वामि-भक्ति आदि दिखाने का प्रयास हुआ है । कविता कवि विशेष की भावनाओं का वर्णन है और वह चित्रण इतना सटीक होता है वैसी ही भावनाएँ किसी दूसरे के हृदय में आविर्भूत होती है ।

****

<u>एक शब्द या वाक्यांश में उत्तर लिखिए -</u>

१. 'कालिदास' कविता कवि के कौन से खंडकाव्य से ली गई है ?
   भस्मांकुर खंडकाव्य
२. अज किसके पिता और पुत्र थे ?
   दशरथ के पिता और रघु के पुत्र थे ।
३. कामदेव किस प्रकार भस्म हो गए ?
   हवन में जिस प्रकार समिधा (सूखी लकडी) भस्म हो जाती है उसी प्रकार कामदेव भस्म हो गए ।
४. मेघदूत में किसके विरह का वर्णन है ?
   यक्ष के विरह का वर्णन है ।
५. 'कालिदास' कविता में किन कृतियों के वर्णन हैं?
   रघुवंश, कुमारसंभव और मेघदूत ।

<u>सप्रसंग वर्णन कीजिए :</u>

१. कालिदास सच-सच बतलाना,
   इंदुमति के मृत्युशोक से, अज रोया या तुम रोये थे ?
२. शिवजी की तीसरी आँख से .....
   रति रोई या तुम रोये थे ?
३. पर पीडा से पूर-पूर हो.....
   प्रियवर तुम कब तक सोये थे ?

<u>निबंधात्मक प्रश्न :</u>

१. 'कालिदास' काव्य का सारांश लिखकर काव्य के अनुभूति पक्ष पर प्रकाश डालिए ।
२. 'कालिदास' काव्य में परपीडा का वर्णन ।

भैरवी आर. पंड्या

पूर्णप्रज्ञा कॉलेज, उडुपि

९८८०४७७७९६